डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए प्रतिष्ठा हिंदी, तृतीय वर्ष, पंचम पत्र

चंद्रगुप्त नाटक में राष्ट्रीय – सांस्कृतिक चेतना

जयशंकर प्रसाद के नाटकों में चंद्रगुप्त का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह एक ऐतिहासिक नाटक है, उन्होंने अपने ऐतिहासिक नाटकों में देशकाल की परिस्थितियों को जीवंत कर दिया है। इस नाटक में राष्ट्रीय – सांस्कृतिक चेतना को जयशंकर प्रसाद ने युगीन संदर्भों के साथ प्रस्तुत किया है। इस प्रकार 'चंद्रगुप्त' राष्ट्रीय – सांस्कृतिक चेतना का एक अत्यंत महत्वपूर्ण नाटक है। यह नाटक 1931 में प्रकाशित हुआ। यह ब्रिटिश शासन का काल था। ऐसे में युवाओं में जोश भरना और उन्हें अपने स्वर्णिम इतिहास से परिचित करवाना अत्यंत आवश्यक था। एक ओर महात्मा गांधी का सत्य और अहिंसा का प्रयोग तो दूसरी ओर अंग्रेजों की फूट डालो और शासन करो वाली नीति। ऐसे में सभी राज्यों का एकजुट होना आवश्यक था। अंग्रेजों ने यह तय कर लिया था कि पंजाब, बंगाल, बिहार, असम आदि राज्यों को शेष भारत से अलग कर देना चाहते थे। क्षेत्र, वर्ग, जाति आदि के आधार पर भेद उत्पन्न किया जा रहा था। ऐसे में समग्र राष्ट्रीयता की भावना को प्रबलता देना आवश्यक था। ऐसे में जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटक 'चंद्रगुप्त' में तक्षशिला में चाणक्य के मुँह से यह संवाद कहलवाया –

"मालव और मागध को भूलकर जब तुम आर्यावर्त का नाम लोगे तभी वह आत्मसम्मान मिलेगा।"

सिंहरण ने राष्ट्रीय एकता की भावना को इन शब्दों में व्यक्त किया है –

"परंतु मेरा देश मालव ही नहीं गांधार भी है। यही क्यों, समग्र आर्यावर्त है।"

अलका ने भी कहा है –

"मैं भी आर्यावर्त की बालिका हूँ।"

अलका का चरित्र राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेनेवाली स्त्रियों को ध्यान में रखकर किया गया है।

इस नाटक में प्रसाद ने गीतों की भी योजना की है। उसी क्रम में युवाओं में देशभक्ति की भावना को प्रबलता प्रदान करने वाला यह गीत राष्ट्रीय – सांस्कृतिक चेतना की ही अभिव्यक्ति है –

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से

प्रबुद्ध शुद्ध भारती

स्वयंप्रभा समुज्जवला

स्वतंत्रता पुकारती।"

"चन्द्रगुप्त' नाटक में ऐतिहासिक – राष्ट्रीय चरित्र के साथ साथ देश की सांस्कृतिक चेतना और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का भी चित्रण है। संस्कृति को वे मानव जाति के उन्नयन का अंग मानते हैं और इसीलिए इस नाटक में उन्होंने भारतीय संस्कृति के उदात्त स्वरूप का चित्रण किया है। उन्होंने भारतीय संस्कृति के आदर्श वसुधैव कुटुम्बकम को प्रमुखता देते हुए मानवता का समर्थन किया है। वास्तव में प्रसाद की सांस्कृतिक चेतना और जीवन – दर्शन का मूलाधार मानवतावाद है। 'चंद्रगुप्त' नाटक में प्रसाद ने राष्ट्रीय – सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति